।।खाटु म बैठ्यो।।

(तर्ज: आने से उसके आये बहार..)
खाटु म बैठ्यो साँवरियो सेठ, आज्या तु करले बाबा स भेट,
बड़ों ही दयालु है, बाबो श्याम मेरो,
बड़ों ही कृपालु है, बाबो श्याम मेरो ।। टेर ।।
दर बदर क्यूँ भटकै, जद मिलगो तनै यो ठिकानों,
साथ यो निभासी, देखले तू भी बनकर दिवानों,
ऑगणियै आयो है, खाटु स चलकर यो ठेठ ।।
हाल यो सुनादे, बाबा न आकर तू सारों,
है दयालु बाबों, जानै कितना को जीवन सँवारयो,
तेरे भी जीवन को, संकट देसी पल म यो मेट ।।
है बड़ों ही साँचों, खाटु को धाम यो प्यारो.
'शिव सुबोध' जो आसी, सच्चे मन से बणै काम थारो,
देर ना कर बेगो आ, अन्नदाता यो सबको भरै पेट ।।

Downloaded from khatunareshshyambaba.in
Website design & developed by syllogisticinoftech.com